वैद्यमनोत्सव

केशव दासात्मज कवि नैनसुख

रचित

जिसमें

सम्पूर्ण रोगों के विनाशार्थ उत्तम २
औषधि और नाड़ी का परिज्ञान
दोहा चौपाई आदि छन्दों में वर्णित है

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोरजीने
यन्त्रालय के पण्डितों से शुद्ध कराय

स्थान लखनऊ

निजयन्त्रालय में छपवाया

सन् १८७४ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथ भाषा नैनसुखबैद्यक लिख्यते

दोहा

श्रीराधाबल्लभोजयति ॥ शिव सुत पद प्रणावों सदा रिद्ध सिद्ध दातार। कुमति बिनासन सुमति कर मंगल मुदित अपार ॥ १ ॥ अलख अमूरति अलख गति किनहिन पायो पार। जोर जुगल कर कवि कहैं देवदेव मति सार ॥ २॥ बैद्य ग्रंथ सब मथन कर रचौ जु भाषाजान अर्थ दिखायो प्रगट कर औषधि रोग निदान ॥ ३॥ मम मति अल्प जु कहत हौं कबि मति परम अगाध। सुगम चिकित्सा चित रचित क्षमहु सबै अपराध ॥ ४ ॥ बैद्य मनोत्सब नामधर देखि ग्रंथ सुप्रकाश। केशव राज सुत नैनसुख भाषा किपो बिलास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा लक्षण कहे देखि ग्रंथ मत सोय पुनि आनो अनुताव हि जैसी मम गत होय ॥ ६॥ अ० नाडी परीक्षा ॥ दोहा ॥ कर अंगुष्ट जो मूल कर देखहु नसा अकार। जानहु दुख सुख जीव को पंडित कहो बिचार ॥ ७ ॥ आदि पित्त पुनि मध्य कफ अति पवन सुप्रधान। त्रिबिध नसा लक्षण कहौं जानहु बैद्य सुजान ॥ ८ ॥ मैंडक काग कुलंग गति पित्त नशा यह भाग। हंस मयूर कपोत कफ नागज लौका बाय ॥ ९ ॥ तीतर लवा बटेर गति सोध मनी सन्निपात। चलै छीन अति सीत सो नसा करत है घात ॥ १० ॥ क्षुधा चपल धमनी चलै उष्ण रक्त की जान ॥ स्थिरा तृप्त की पुनि कहैं आगम नारि बखान ॥ ११ ॥ और चले बेग और तप्त होय ज्वर लक्षण धमनीयक्ष ऋचि किस्ता समरू करि जो सुख पावै जीय ॥ १२ ॥ अथ-

पित्त कफ बायु निदान ॥ चौ० ॥ बिषमा सन जु खटाई खार । क्षुधा तृषा ले बहुत अहार ॥ कटुक तिक्त स्रम मदिरा पान । सेकय अपि क्रोध परवान ॥ १३ ॥ उष्णजु खाइ धूम महि गमैं । आधी रात दुपहरी समैं ॥ कार्तिक जेठ आसु बैशाख । पित्त बिकार परगटै भाष ॥ १४ ॥ मधुर दुग्ध दही तिलन बनीत । लवन खटाई पल कष सीत ॥ भोजन तप्त अंबर दिन सीवै । फाल्गुण चैत्र समै कफ होवै ॥ बोले तुरंग बात ब्रत गहै । चिंता देष भयानक करहै ॥ रूषा षाय कटुक निसि जागै । संध्या समय सीत तन लागै ॥ १६ ॥ भक्षण करै कसैला सोई । किये अहार बायु अंग होई ॥ इतनो देख के करै बिचार । बाय रोग जाय तत्कार १७ ॥ दोहा ॥ मंगशिर पौष जो माघ में भादों श्रावण तास । पुनि आषाढ़ पंडित कहैं बाय मास षट मास ॥ १८ ॥ अ० बाय पित्त लक्षण ॥ चौ० मुख कटुता ब्याकुल परलाप । सूखहि अधर स्वेद अरु ताप ॥ मूर्छा दाह सीत पर प्रीति । लक्षण मनहुं पित्त के मीत ॥ आलस सेहर खांसी स्वांस । मुख मीठा अरु भूख का नास ॥ हिया भार गलग्रह रहै । कफ के लक्षण एते कहै ॥ २० ॥ देह पीड़ा तालु जलै । आलस डोवा मन में हि करै ॥ देही सीतल निद्रा नास । रूषा अंग होय बरु तास ॥ २१ ॥ भूख हीन मुख फीका रहै । उष्ण प्रीति कफ ज्वर गहै ॥ नैनसुख सुकवि कियो बखान । मारुत लक्षण एते जान ॥ २२ ॥ अथ पित्त कफ बायु उपचार ॥ दोहा ॥ त्रिया संग अरु बीज ना सीतल सलिल सुजान । भोजन मधुर सुगंधता करता को पहिचान ॥ २३ ॥ क्षार कसैला तिक्त कटु तप्तोदक उपवास । बमन बिरेचन स्वेद पुनि होय नहीं कफ नास ॥ २४ ॥ तप्तोदक ब्रत उष्ण इब मर्दन तेल शरीर ।

सुरा पान सेके दहन इन तें जाय समीर ॥ २५॥ अ० साध्य लक्षण ॥ सोरठा ॥ होय जथा जसु हीन कर पद नाभि जोतसही । मृदु रसना पर बीन सुलभ लक्षण ताको कहौं ॥ २६॥ इंद्री अंग रहैं चेतन्न सुख निद्रा आवे सुप्रसन्न । शुभ कि बजनु सुनै बचन कहै स्वाद आदि सब के गुन कहै ॥ २८ ॥ बिन प्रस्वेद ज्वर जान न होय सरल स्वास हीन कफ होय । करहु चिकित्सा ताको जान। सो नर जीवै कहौं बखान ॥ २९॥ अ० असाध्य लक्षण ॥ दो० ॥ जायजु मारुत पित्त यह पित जाय कफ गेह । कफ आवे जब कंठही प्राण तजे सब देह ॥ ३०॥ सो० ॥ कंठ बिषै कफ होय निसा दाह पुनि सीत दिन । मरै जु रोगी सोय कछु न बनै उपाय तसु ॥ ३१॥ गुदा भ्रष्ट अरु हीन स्वर कांस स्वांस पुनि जासु ॥ व्याकुल हिचकी सोख तनते जम पुरहि निबास ॥ ३२॥ हृदय चरण कर नासिका बाति होय हिम जासु । सीत तप्त जिह्वा रहै जमपुर जाको बास ॥ ३३॥ दरपन घृत जल तेल में छाया देखो आन । स्वांस रहित तन देखिये मीच पक्ष में जान ॥ ३४॥ मंजन कीजै तीन अंग कर पद हिये निहार । सूक हिखवे तत्काल सों जो मृत होय बषान ॥ ३५॥ कर बिचार दीपक बुझे आवे कछु खन गंध । मति लज्जा पुनि नास होय तासु लेह जम फंद ॥ अ० कालचक्र ॥ आर्द्रा आदि सु अंत में मूल पुनि सोय । नक्षत्र इहुर बनासु नर एक नसा जब होय ॥ ३७॥ रोगी मृत होय जब जाय जिह्वा जमधाम । सो शिव कहौं बिचार कर काल चक्र धर नाम ॥ ३८॥ इति श्री केशवदास सुत नैनसुख कृत बैद्य मनोत्सवे नाड़ी परिक्षा बात पित्त कफ निदान साध्यासाध्य लक्षण कालचक्रानाम प्रथमः समुद्देशः १ अ० द्वन्द्वज्वर लक्षनं ॥ मूर्छा तृषा प्रलाप पुनि शिरो वर्त भ्रमत नेह । दाह कटुता बद नरा लक्षण पित्त ॥ अ० ज्वर लक्षण ॥ दोहा ॥ स्वांस कांस रोमांच गुरु खेद निद्रा सीत । बमन अरुचि मुख मधुरता कफ ज्वर लक्षण एह ॥ ४ ॥ अथ बात ज्वर लक्षण ॥ दोहा ॥

सिर के दूखे मांच भ्रम जीव कंप जंभाइ। मोह सोथ लजुक खाय मुख ए लक्षण ज्वर बात ॥ ५॥ अ॰ मलयज्वर ल॰ ॥ सो॰ ॥ दाह सोख परताप अन्न पीठ अरु चित भ्रम। ए लक्षण मल ताप कहैं जु ग्रंथ विचारके ॥ अ॰ जीर्ण ज्वर ल॰ ॥ दो॰ ॥ वमन विरेचन उदर दुष बहु डकार होजास। ए लक्षण ज्वर के कहूं देखहु ग्रंथ निकास ॥ ५७॥ अ॰ स्वेद ज्वर ल॰ ॥ निद्रा जंभण फुटे तन होत अंग पर स्वेद। कहैं सुवैद्य विचार के ए लक्षण ज्वर खेद ॥ अ॰ दृष्टि ज्वर लक्षणं ॥ जंभण मुख चहुं अस्त तन उदर पीर तन अंग। ए लक्षण ज्वर दृष्टि के कहैं जु वैद्य प्रसंग अ॰ काल ज्वर ल॰ ॥ दो॰ ॥ स्वास सतप्त स्वेद तन कर पद सीतल होय ए लक्षण ज्वर काल के तिसहि उपाइ न कोय ॥ ५०॥ अ॰ ज्वर पाक दिन चौ॰ बात सीत पीत सव ज्वान। कफ बारह दिन रहै प्रमानं ॥ सन्निपात मर्जाद हि जाणके जीवे के रहे नियान ॥ सो॰ ॥ सप्त दिवस गंधावहै दस वासर कहो पित के कपि द्वादस दिन अवहि जानहु रपक होय के अ॰ लघु सुदर्शन चू॰ चौ॰ सोंठ कटाई पुहकर मूल। काकड़ा सीगी कंट कचूर ॥ मह लेंडी गिलोय आवला सालजु पर्णी हलदी पीपल मिस्व कालौंजी पत्र जमान। पित पापरा पत्रय आन। अगर धमासा कूट मिलाय लोचन वाला मूर्वा पाय ॥ ५४॥ तज अतीस सुरदो छाल। मोथा पटोल जावाइन आन ॥ चित्रक अभया पीपर मूल। ए औषधि मानहु सम तूल ॥ नेपाला की राता जान। सब औषद तें आधा आन। इन औषद को चूरण करै। नाम सुदर्शन लघुता धरै ॥ ५६॥ चूर्ण पीजे जल ही घाल ज्वर नाशे लव होय तत्काल ॥ वाय मोह तंद्रा न रहाय पांडु रोग की मलता जाय हि यपुदा दोष मूल सब जाय सन्निपात तेरह नहाय स्वास कास पीड़ा सब जाय यहोय निरोग मुदा सुख पाय ॥ ५८॥ अ॰ ज्वरांकश सोठ मिर्च अरु पीपर टंक टंक परमान बंधक विष पारद क होय दो टंक परमान ॥ ५६ ॥ बीज धतूरे टंक बीच पीसहु औषध सोय। अद्रक रस सों मर्दि पचर गोली रती दोय ॥ ६०॥ गोली खाइये प्रातउ-

ठि रस आदे का घाल । ताप पित्त कफ बात को नास हिये तत्काल ॥ ६-
तीजे दूजै नित्य को अरु चौथा ज्वर जाय । सूक्षम बिषम सीत ज्वर उद-
र व्याध नरहा पके महा जुरां कुश नाम कहि आतेसयह आन । वैद्य म-
नोत्सव पंथ में भाषा कह्यो बषान ॥ ६३॥ अ॰ जुरांकुश ॥ शंख भस्म
हरताल सम अठ टंक लेहु बिचार । नीला थोथा टांक दो तीन पुट दे-
य कुमार ॥ ६४॥ औषधि संपुट में धरै ताक डुंगज पुट देय । पहर चा-
र पान कर है सीतल भए जु लेय ॥ ६५॥ एक रती जो प्रमाण गहि खा-
ब सो दीजै जासु । भात दुग्ध ता पथ्य दे होइ सबै ज्वर नास ॥ ६६॥ कहीं
जुरांकुश चरक मति पंडित लेहु बिचार । नास हिं रोग अनेक बिधि
सिद्ध प्रगट संसार ॥ ६७॥ अथ ज्वर घी गुटिका ॥ पीपर मै नसिलस-
नोब कल रस जु करेस्तु लिपाइ।गोली कीजै पीस के ताप त्रिदोष मि-
टाइ ॥ ६८॥ अ॰ पित्त ज्वर का लक्षण चूरण ॥ सो॰॥ पित पापरो आनि
जल सों पीजै पीस कर । टांक एक परिमान दाह पित ज्वर ना रहै ६९
अ॰ पित्त ज्वर दाह चूरण।नेत्र वाला अरु मोथा आन । चंदन पित्त पापरा
आन ॥ सोंठ उसीर नीर सों लेइ । दाह पित ज्वर नास करेइ॥७०
अ॰ कफ ज्वर को नास ॥ दो॰॥ सोंठ मिरच अरु काय फल पीपर ता-
हि मिलाय । नास जु लीजै नीर सों कफ ज्वर छिन महिं जाय ॥७१॥
बात ज्वर को चूरण ॥ सो॰ ॥ सोंठ चूर पाइ पीपर मिरच चिरायता ॥
कटु सिवा जुर लाइ चूरण हरे सु बात ज्वर ॥ ७२॥ मल ज्वर को क्वा-
थ ॥ पंथ और कनियाल मोथा कडु हरति को।पियो क्वाथ तत्काल
मल जुर कफ का नास होइ ॥ ७३॥ अ॰ चूरण रस ज्वर को ॥ दोहा ॥
अज मोदा रु हरीत की सौं चरता महि पाइ । पीस पियो जल तप्त
सों रस ज्वर छिन में जाय ॥ ७४ ॥ अ॰ खेद ज्वर का उपाय ॥ मर्द-
न कीजै अंग को तेल तिलहि को आन । पुनि मज्जन जल तप्त सों
खेद ताप का जान ॥ ७५ ॥ अ॰ दृष्टि ज्वर चूर्ण ॥ पीपर मिरच चिरायता
सोंठ हींग सम घाल । चूरण खाइये टंक इक ताप दृष्टि को टाल ॥ ७६ ॥

अ॰ बाय पित्त कफ को चूरण॥ मोथा सोंठ चिरायता पित्त पापरा जान।
पीपर कण गिलोय पुनि ए सम पीसहु आन। यह चूरण सुमसह स-
अतिजल सों पीजै प्रात। अनिल पित्त कफ दोष पुनि होय सबै ज्वर घा-
त॥७८॥ अ॰ सीत को चू॰॥ पीपर सोंठ गिलोय पुनि गुंजा जाहि मिलाय
जल सों पीजै टंक दोय सीत ताप न रहाय॥७९॥ अ॰ बिषमज्वर को चू॰
पीपर सिवा जु आमला चित्रक सैंधा सोइ। चूरन पीजै नीर सों नास
बिषमज्वर होय॥ अ॰ कांस स्वांस बिषमज्वर को का॰ पद्द रोहं॰ कटु पा-
ही पुहकर मूलजान। समतूल गिलोइ सोंठ आन॥ यह क्वाथ जो कीजै
जल मिलाय। कफ कांस स्वांस बिषम ज्वर जाय॥८१॥ अ॰ चतुर्थ ज्वर
की धूनी॥ दो॥ गगल उलू पांष पुनि स्याम बस्त्र मे लेय धूनी दीजै प्रा-
त उठि ज्वर चतुर्थ हर लेय॥८२॥ अ॰ कांस स्वा॰ ज्वर को अवलेह॥
मिरचु र पीपर पीस के मधु सों चाट हु आन। हिक्का कांस अरु स्वांस
ज्वर होय लीप की हान॥८३॥ अथ सन्निपात चिकित्सा आनंद भैरव र-
स॥ सिंगरफ मिरच पीपरे बिष टंकन जु समान। अद्रक रस गोली
करै रती एक प्रमान॥८४॥ आनंद भैरव रस कह्यो सन्निपात ज्वर जाय
बात रोग सीतांग कफ मोह मूल मिट जाय॥८५॥ अ॰ चिंतामणि रस॥
गंधक पारद पीपरे मिरचें जीरे दोय। पंच लवण जयखार बिष अ-
भ्रक सोंदी सोय॥८६॥ अद्रक रस और पान के सब औषधि पुट
देय। परमित चणक प्रमाण ही गोली सुमति बंधेय॥८७॥ रस चिं-
तामणि यह कह्यो करै नास सन्निपात। आमबवेसी मूल कफ
होय बिषमज्वर घात॥८८॥ अ॰ कनक सुंदर रस सन्निपात को॥
दो॰॥ मिरच पीपर सोंठ बिष गंधक पारद जान। टंक दोय लीजिये
कनक सुंदर मूल जय आन॥८९॥ मर्दन कीजे तीन दिन रस जो भंग
र पाय। गुंजा सम गोली कर हु प्रातहि उठि सो खाय॥९०॥ सन्निपा-
त सीतांग कफ मदज्वर बेला लाय। मंद अग्नि उन्माद धम एते रो-
ग नसाय॥९१॥ अ॰ उर मूल क्वाथ सन्निपात को॥ धनिया मोथा

चिरायता कंडु इंद्रजवु आन । देवदारु दसमूल सोंठि और गज पीपर आन ॥ ९२॥ काथ जु करके पीजिये सन्निपात ज्वर जाय । तंद्रा हिक्का लमी कफ कांस स्वांस जु मिटाय ॥ ९३॥ अ० सन्निपात को अंजन ॥ त्रिफला त्रिकुटा हींग बच सैंधा कंडु मिलाय । पीतज्ञु सरसों सिरस फल ए औषधि सम भाय ॥ ९४॥ अजा मूत्र सों पीस कर अंजन करन पनाय । अपस्मार उन्माद भ्रम सन्निपात न रहाय ॥ ९५॥ तिमिर रोग निसि अंध पुनि भूत दोष सिर नवति । बैद्य जु कह्यौ बिचार के एते करे निवति ॥ अ० सन्नि० का० कुंभ कुंमल बंगजु पीपरे अकरकरा जुर लाय । अद्रक रस सों पीस के टंक एक जब खाय ९७० सन्निपात उन्माद कफ तंद्रा मारुत कांसा स्वांस मूल भ्रम मोह ज्वरइन को करै बिनास ॥ ९८॥ अ० अतीसार चिकित्सा लीलावती बड़ी लिख्यते । चौ० । मिरच मस्तकी दाडिम कली । बंशलोचन आमकुठली ॥ लोद मुलेठी माई षाय । माजूफल मोच रस पाय ॥ ९९॥ कुड़ा जायफल किंकर फूल । काथ बिभाग अंबर सम तूल ॥ ये सब औषध भागजु चार । पेठा बीज गुरी तिनि बार ॥ १००॥ पोस्त जल सों गोली कीजिएकटंक परमान धरीजे ॥ तंदुल जल सों पीजे आन । ताके गुन को सके बषान ॥ १०१॥ अ० वृद्ध गंगाधर चूर्ण ॥ मोथा अरलू सोंठ धाई । बील अतीस मोच रस पाई ॥ लोधल जालू आम के बीज । मुठी पाय इंद्र जो लीज ॥ १०२॥ लोच वाला पुन मधु पाय । तंदुल जल सों पिये मिलाय ॥ मठा भात भोजन ता मांय । अतीसार छिन माहिं थंभाय ॥ ३॥ अ० लघु गंगाधर चूरण ॥ सोंधा त्रिकुटा मोचरस अजमोदा जु मिलाय । पीस छाछ सों पीजिये अतीसार मिट जाय ॥ लेपाआमसु बीज अरु जायफल वाल काथ । तामें मोथ गिलोय अरु निंत्य अफीम मिलाय। काथो करके पीजिये अतीसार ज्वर जाय ॥ ५॥ अ० संग्रहणी चिकित्सा ॥ दोहा ॥ धनियां मोथा सोंठ पुनि बाला बीज कछु घाल ॥

क्वाथ जु करिके पीजिये संगृहणी को टाल ॥१०६॥ अ. संगृहनीवायुमू-ल कोउपाय ॥ चौ. ॥ मोथा सोंठ गिलोय अतीस । तप्तनी रसों पीवे पी-स ॥ आव अरुचि सगृहनी नाय । धाप सतछून माहि मिलाय ॥१०८॥ अ. आम अरुचि संगृहणी को क्वाथ ॥ गायन छंद ॥ लोई पटल जाल सोथा सुजु पाठ्हा धनिया अतिस गिलोय वाला कूड़ा धाय सिला-य । होसमसेसं औषधि क्वाथ कीजे प्रात उठि के पीजिये । अ. मूल अरुचि संगृहणी नासे सबै कह दीजिये ॥११०॥ इति श्री केशवदा-स पुत्र ल्सुषविरचिते वैद्यमनोत्सवे ज्वर सन्निपात अतीसा संगृहणी प्रतीकार नां द्वितीयो समुद्देशः ॥२॥ अ. विवेशी रोगचिकित्सा ॥ दो. ॥ पा-इक बिखेबीच सोंठ पुनि चक्रक आठ प्रमांन । पूर्ण षोड़श भाग ले चूरण करहु सुजान ॥ १११ ॥ दुगुण लगुड़ षाई कघुटी करइं रंक होय । पेट अफारा गुल्म गुद नास ववेसी होय ॥११२॥ अ. चूर्ण ॥ अरलू बी लाई इन्द्रजव सोंठी सेंधा बेल चूर्ण पीजे तक्र सों रोग ववेसी रेल ॥ ११३ ॥ खूनी ववेसी की औषधसों दूधी वड़ी जो आनि। घृत लोंग सों पीजियेटाक७ परमान रक्त ववेसी ना रहै॥ ११४ ॥ अथ चूरन ॥ दोहा ॥ सूरत बच अरु मूसली कूड़ा सोंठ सम भाय । पीस छाछ सों पीजिये रोग ववेसी जाय ॥ अ. भ-गंदररोग को लेप ॥ दूती हलद आमले पीसहु नीर मिलाय ॥ ले-प जु कीजे प्रात उठि रोग भगंदर जाय ॥ अश्व बिलाई आनि क त्रिफला रस संयोग । तापसि लाई पैजान के जाय भगंदर रोग ॥ ११७ ॥ सेंधो सोंठ जु हरद पुनि बट पल्लव जु मिलाय। जायपत्र घिस लाइयो रोग भगंदर जाय ॥ रोगगुल्म रोग प्रतीति सौंच-र सेंधा सोंठ हींग अज लोन पुन जात अभया पीपर अजमो-दन बायार बिड़ग समान इन का चूरन कीजिये घृत सों खा-य मिलाय । गोला शूल बिसूचिका अर्श अजीरण जाय ॥ १२० ॥ अ. आम वात चिकित्सा जासुका कहूं लेप ॥ सरसों-

सोंठ सहजना बचोमु सुरदार । कांजी सों जब लेपिये सोजा वृथा निवार ॥ २२२ ॥ अ॰ पिप्पलादि चू॰ चौपाई ॥ पीपर आठ कटाई जान । सोंठ सुअम्या जीरा आन ॥ मोथा चित्रा पीपरा मूर । गज पीपल मेलहु सम तूल । तप्त नीर सों पीजे पीस ॥ आम बात देह नहिं दीस । मूल अभूप फिरि न रहाइ । खांस सांस सब छिन में जाय ॥ २२३ ॥ अ॰ चू॰ सोंठ बिड़ंग हरीत की देवदारु जु मिलाय । तप्तोदक सों पीजिये आम बात न रहाय ॥ २२४ ॥ दार हरद अरंड पुनि विंव बिडंगप तीस । मिरच इंद्र जब आनि के लीजे सम कर पीस ॥ २२५ ॥ तप्त बार सों पीजिये आम बात न रहाय । क्रम की पीड़ा उदर में यही लिये जु खोहाय ॥ २२६ ॥ अ॰ आम बात को चू॰ ॥ गुग्गल शिवा पुनर्नवा दारु निशा जु मिलानि । धेनु मूत्र सों पीजिये होय उदर क्रमि हानि ॥ २२७ ॥ अ॰ मूल रोग प्रतीकार ॥ सोंचर हींग जु सोंठ पुनि आनहु सम कर भाय । पीस पियो जल तप्त सों मूल बिसूची जाय ॥ २२८ ॥ अ॰ हिंग्वाष्टक चू॰ मिरच पीपर सोंठ हिंगु सेंधा जीरा दोय । अजमोदा जल तप्त सों मूल विसूच न होय ॥ २२९ ॥ अ॰ चू॰ मूल का ॥ दोहा ॥ पीपर-सोंठ हरीत की सोंचर सिंधि समान । तप्तोदक सों पीजिये नास मूल को जान ॥ २३० ॥ अ॰ त्रिंबुरादि चू॰ सो॰ तूबर पुष्कर मूल लवन मिरच जवाखार पुनि । अभया गनहि मेल अजवायन जु बिड़ंग पुनि ॥ २३१ ॥ टंक दोय परमाण ज्यूंही औषध लीजिये । तिबी तीन टंक जान इन को चूरण कीजिये ॥ एक टंक परिमाण नीर तप्त सों पीजिये । मूल गुल्म कफ जाय आम बात कफ हान गुहु ॥ अ॰ मूल का चू॰ ॥ सोंठ मिरच और पीपली साजी तांहि मिलाय । पीस पिया जल तप्त सों मूल रोग मिट जाय ॥ २३५ ॥ अ॰ पांडु कमल रोग प्रतीकार ॥ दोहा ॥ त्रिफला कंडु चिरायता बांसा नीम गिलोय । पीजे काढ़ो सहत सों ना-

से पांडु रोग ॥ १३५ ॥ अ॰ अवलेह ॥ त्रिकुटा रजनी आंवले लो-
ह चूरन पुनि पाय । चाटहु मधु घृत पाइ के पांड कामला जाय ॥
१३६ ॥ अ॰ अवलेह त्रिफला कटु हलद दोउ पुनि देय । कमल वा-
य सब ही हरै मधु घृत सों जब लेय ॥ १३७ ॥ अ॰ कमल बाय कोपो-
टली जोग । सूधी बासता स्वांस नासै संग कामला रोग ॥ १३८ ॥ गे-
रु हलद आंवले कर अंजन नयना हु कमल बाय का नास हो-
य मसूर पथा जो खाय ॥ १३९ ॥ सो॰ ॥ कालंगद की आनत कसहत
जो पीजिये दिवस सात परमान कमल बाय तन ना रहै ॥ १४० ॥
अ॰ खुई रोग प्रतीकार ॥ दो॰ ॥ अस गंध सोंठ पीपल लौंग हू मिश्री व
मैं पाय । जल सों पीवै पीस के खई रोग न रहाय ॥ १४१ ॥ अ॰ गुटका
फूल आकके न वंग संग पीसहु सम कर आन । गोली दीजै प्रात
उठि होय खई की हानि ॥ १४२ ॥ अ॰ चू॰ त्रिफला सोंठ बिड़ंग मि-
रच पीपल मोथ पुनि पीपला मूल लौंग पुनि देवदारु तज लाय-
ची पदम पत्र और रासना गज के सरिसौं मिलाय सब तें दूनी
मिश्री खई रोग न रहाय ॥ १४५ ॥ इति श्री पंडित केशो दास पुत्र
नैन सुख बिरचिते बैद्य मनोत्सवे अर्स भगंदर गुल्म आम
बात शूल पांडु कमल खई रोग प्रतीकार नाम तृतीयो समुदेशः
अ॰ हुचकी रोग प्रतीकार ॥ बीट माखी की लाख रस पीसहु
दोनों पाय । नास लेइ नर प्रात उठि हुचकी बहुर न आय ॥
१४५ ॥ अ॰ चूरण ॥ दो॰ ॥ मिरच लवंग अरु मिश्री गिरि बे-
र की पाय । मधु सों पीजै पीस कर हुचकी रोग पलाय ॥
१४६ ॥ अ॰ धूणी ॥ मैनसिल हलद जु आनि के पीसहु स-
म कर जोग । मुख महि धूणी दीजिये नास हूचकी रोग ॥
१४७ ॥ अ॰ कब रोग प्रतीकार ॥ चंदन मोथा इलायची ला-
जा कणा लवंग । कमल बीज अरु लायची चाटहु मधु के
संग । छर्द रोग का नास हो ॥ १४८ ॥ अ॰ स्वास रोग प्रतीकार ॥

सोंठपीपल का कड़ा सींगी। पीपला मूराकू चूर भाडंगी। मोथा सिर-न तप्त जल सों लेय। महा स्वास का नास करेय ॥ १४९॥ अ॰ धूणी पद्धरी छंद ॥ कटाई पुष्कर मूल जान। बासा औ सोंठ कुलत्थ आन। ऐ पीस जो पीवे तप्त नीर। सो स्वास कास मिट जाय पीर ॥ १५०॥ अ॰ कांस रोग चिकि० ॥ सोंठ बहेड़ा पीपली काकड़ा सींगी जान। भाड़ंगी मकवार फल ये सम पीसहु आन ॥ १५१॥ गोली कीजे नीर सों टंक दोय सम देय। निसा-समय मुख राखिये वृद्धि कासताको होय॥१५३॥ अ॰ गोली षांसी की बांसा सोंठ पीपली चूक कटाई पीस पियो जल तप्त खांसी सोधी सी जाय ॥ १५४॥ अ॰ बटी बिल्ल कौड़ी सिरखे ज-स्योतिर्फला कौड़ी जलाई ऐ बवणी दुणी पंच तीन परवान। गोली मूंग समान कर कफ खांसी की हान ॥ १५५॥ अ॰ मंदाग्नि प्रतीकार ॥ पीपल सोंठ हरीत की चित्रक लेहु समान । पीस पियो जल तप्त सों भूख बधहि बहु जान ॥ १५६॥ अथ गुटिका ॥ त्रिफला त्रिकुटा लोंग हींग अरु अजवायन सोइ सम गुड़ गोली कीजिये मंद अग्नि नहिं होइ ॥ १५७॥ अ॰ चू॰ गज केसरी सोधा सो चलबाय बिड़ंग। त्रिफला त्रि-कुटा तीन लवंग। चीता हींग अजवायन जान। जीरा दोउ अ-नार दोना जान ॥ १५८॥ इन औषद का चूरन करहु ॥ तीन पुटहि नीबू की धरहु ॥ टंक दोय ता दिन प्रति खाय । मंदअग्नि छिन माहि पलाय ॥ १५९॥ अ॰ बिसूचिका प्रतिकार दोहा ॥ ते लतिलोंका आनि के मर्दन कीजे सोय । नास बिसूचिका होय सिद्ध योग ले कहेउ ॥ १६०॥ बांय टोंकाउ-पाय । [illegible]कूट चूक तेल विक तप्त कर चूरन को मेल कर मर्दन जो कीजे लाय ॥ १६१॥ इति श्री पंडित केशव दास पुत्र नैनसुख बिर्चिते बैद्य मनोत्सवे हिका छर्द स्वांस कास बिसू-

बिका प्रतीकार नाम चतुर्थः समुद्देशः ॥ ४ ॥

अथ कुरंड बाय प्रतीकार ॥ दोहा ॥

जीरा सेंधा हींग लसन कटु क तेल पचाय । लेपन कीजै प्रात उठि अंड बृद्धि सो मिटाय ॥ २६२ ॥ अथांड रोग चूरन ॥ त्रिफला चूरन टंक इक गोमूत्र संग पिवाय । अंड बृद्धि सु मिटायहै कहै जु कवि समझाय ॥ २६३ ॥ शरपुंखा की जड़ को लेइ टंक सु एक घीव सों देइ । मास एक जो सेवा करै अंड बृद्धि को निश्चै हरै ॥ २६४ ॥ एरंड तेल बहाल मिल पीस हु घृत संयोग । पीस हु बार उठ कर हरै अंड का रोग ॥ २६५ ॥ अ. लेप ॥ जीरा एरंड कूट स-ब चहो बेर मिलाय । कांजी सो जब लेपिये अंड सोय न रहाय ॥ २६६ ॥ अथ प्रतीकार ॥ प्रमेह कामुह सुंदी दाड़िम कलो सेत काथ समखंड । दिन दश चूरन टंक एक ले प्रमेह बिडंग ॥ २६७ ॥ अथ चूरन प्रमेह का ॥ बड़ी एला खंड सम चूरन टंक मिलाय भोजन कीजे पथ जे कइ हर पर सेय संखा हूली लायची सिलाजीत पुनि देय । सब प्रमेह का दुख हरै खास-हित हिजो लेय ॥ २६८ ॥ रस गिलोय का आनि के पीजे सहत मि-लाय । सब प्रमेह का दुख हरै प्रात जो उठि कै खाय ॥ २७० ॥ मुइलहटी टंक दस इसबगोल टंक १० मिश्री टंक १ सहत टंक ४ टंक दोय नित खाय भोजन दुध मा प्रमेह जाय ॥ मूत्र कृछ्र प्रतीकार ॥ एला बासा गोखरू कथा रेणु का उपाय । भस्म मे-द ताकाद मधु काटा हूर मिलाय ॥ २७२ ॥ सिलाजीत और मि-श्री काय समता पाइ । मूत्र कृछ्र सब दोष के प्रमेह पाथरी जाइ ॥ चूरन बासा अंड इलायची दधि सों देय मिलाय ॥ मूत्र कृछ्र छिन में हरै कह्यौ जुता समझाय ॥ २७४ ॥ सिता-र लाज बार बार धर जल सों पीजै आन । मूत्र कृछ्र सब दोष को नास हु बाता जान ॥ २७५ ॥ बिका मूसा की जो म

नी तंदुल जल में मेल । नाभ तले जब लेपिये सूत्र रोध को रे-
ल ॥ १७६ ॥ पद्धरी छंद ॥ गोखरू जवासा हरे आन । पाषाण
भेद कुशापाल जान ॥ यह काढ़ा पीजे सहत पाय । तब मू-
त्र रोध छिन मांहि जाय ॥ १७७ ॥ अ॰ चू॰ ॥ त्रिफला सेंधा गोख-
रू बीज ककटी पटाय । तप्त नीर सों पीजिये सूत्र रोग न रहा-
य ॥ १७८ ॥ अ॰ पथरी प्रतीकार ॥ बरना सोंठ गोखरू का-
थ करहु समझाय । पावो गुड़ जब खाय पुनि बात पथरी
न रहाय ॥ १७९ ॥ अ॰ चू॰ ॥ अरुणी बरुपा गोखरू सोंठ
हरड़ें देइ । भस्म भेद कनयल फल छान सोंहजनालेय ॥
१८० ॥ काथ जो याको पीइये निश्चे ही गजवा खार । स-
कल रोग पथरी जाय सूत्र कृच्छ्र अरु उदर दुख ॥ १८१ ॥
अ॰ मृगी रोग ॥ पुष्कर मूल चिरायता ब्रह्मी सोंठ कचूर
दारु हलद सुरदारु बच मोथा पीपलमूल ॥ १८२ ॥ अभया-
रो हि ससि रस कुट करहु काथ नर जाय । मृग रोगी उ-
न्माद कफ ताप बिसूची जाय ॥ बच खुरासानी सेवत अं-
ग टंक दोइ जो लेय । मृगी रोग जब ही हरे दुग्ध भात प-
थ देइ ॥ १८४ ॥ अ॰ नाश ॥ मिरच तासें हड़ मांहि धर।
दिवस कास परमान। लेइ नास नर सों होय मृगी की हा-
न ॥ १८५ ॥ अ॰ ब्राह्मी घृत ॥ ब्राह्मी रस बच कूट संग सं-
खाहोली देय । गो घृत महि सोंसिधकर मृगी बाय हरेय ॥ १८६ ॥
कुष्ठ रोग ॥ चौ॰ ॥ त्रिफला वासा नीम पटोल । फार गिलोय ता
सम कर तोल ॥ चूरन पीजे जल में घाल । कुष्ठ रोग नाशे त-
त्काल ॥ १८७ ॥ अ॰ चू॰ ॥ त्रिफला मंजीठ गिलोय कुटकी निं-
बनि साजो आनि हौं। बच दारु हरद बिडंग बासा देवदारु सो-
ठानि हौं ॥ सम पीस कर चूरण करो बिध सों पीजिये पानी सं-
ग कुष्ठ रोग तो प्रबल भाजे नासे आकड़ आगे ॥ अ॰ मंजिष्टादि

मंजिष्ठ त्रिफला कटु रसनी निंब गिलोय । देवदारु बच पीस के काढ़ो कीजे सोय ॥ १९० ॥ प्रात उठी सो पीजिये बात रक्त न रहाय । अंस कुमंडल भाय दइ सबत कुष्टि मिटाइ ॥ १९१ ॥ अ॰ लेप ॥ गुंजा नींब कुटा बच चीता ये सम पीसहु मेरे । मीता कांजी सों पीस ले पन करे स्वेत कुष्ट को निश्चै हरै ॥ अ॰ लेप ॥ अन्न कान्विरु आन लेप करो भारंग को ॥ स्वेत कुष्ट की हानि सिद्ध योग नैना कह्यो ॥ १९३ ॥ खयर आमरे सम कर लेहु । उठि सकार सम क्काथ करेहु ॥ टंक दोय बावची मिलाय ॥ स्वेत दाग इक मास सामा में जाय ॥ १९४ ॥ अ॰ केंडुक का चू॰ ॥ हलद बावची नींब दल अबरु आवला पाय ॥ टंक दोय जो मूत्र सों पीवत कंडू जाय ॥ १९५ ॥ अथ लेप ॥ सिंदुर मिरच समान कर मह बानत संयोग । मथ के लेपन कीजिये नाशै पामा रोग ॥ १९६ ॥ गंधक चौक विडंग फलु सिंगरफ सुजान । हलद पवाड़ सिंदूर सों पीसहु सम कर आन ॥ १९७ ॥ कनक बीज तंबोल रस लेपहु इनहिं मिलाय । पामा व्यौची दाद कुष्ट एते रोग नसाय ॥ १९८ ॥ अ॰ विपी का उ॰ ॥ दो॰ ॥ प्रात आक की भस्म कर माखन संग मिलाय । कुष्ट बावची कासों हरै जब नर लेप कराय ॥ १९९ ॥ अ॰ लेप ॥ सो॰ ॥ टांक हलद ता लेय नीला थोथा बावची । साजी चौक सो दइता सब से दुगन. पवाड़ कर । कटुक तेल में पाय मर्दन कीजिये दिन महिषी गोबर लाय नासा बामा अंग बिधि ॥ २०० ॥ अ॰ पामिनी नासे ताको उ॰ ॥ काली मिरची हरद बिडंग । पोह कर मूल कूट के संग । सोंठि निगंध बावची लेय लोकन कोऊ कीजो देह । कालंगद नीबू के पात कीरी जारी करि है भात २ गेरु मिरचें पुहकर मूल । बोल कठी को ले सम तूल । लेपन गोमूत्र संग करै । लहर निनाई को सब हरै । सर्व जो बीज पिस पाउ पलाइ । कहै नैन सुख सों समुझाय ॥ ४ ॥

दूब हलद सम पीस के लेप हु यह संयोग । पामा स्वांस आरु दाद
दुख नासे एते रोग ॥ ५ ॥ अ॰ पन लूत काउ ॥ चौ॰ ॥ चंदन कूठ सं-
भालू खाय । कमल सिरा सम मैलौ भाय ॥ लेपन कीजे जलमे
घाल सूल बिथा नासे तत्काल ॥ ६ ॥ अ॰ छीप प्रतीकार दो॰ कदलीता
की भस्म कर तामे हलद मिलाय । लेपन कीजे नीर सों छीप रोग
न रहाय ॥ अ॰ लेप ॥ पद्धरी छंद ॥ चंदन हरताल कपूर सुहागा
मूली बीज आनी जंभीरी जसों लेप लायसो छीप रोग छिन मां-
हि जाय ॥ ८ ॥ अ॰ लेप ॥ सो॰ ॥ गंधक चंदन आन नीबू रस
सों लेपिये । दिवस अरसाहवान छीप रोग तन ना रहे ॥ अ॰ नारु
प्रतीकार ॥ अर्ध दग्ध कर सीप को दधि सों पीजे सोय । नि-
ज दुखिय ने कह्यो सो नारु बहुर ना होय ॥ १० ॥ शस्त्र घाव की
औ॰ ॥ काक जंघा मूल कूट शस्त्र घाव में देय । पाड़ा रक्त प्रवाह
रत ही घाव मिलाय ॥ ११ ॥ इति श्री केशवदास सुत विर्चते बे-
द्यमनोत्सवे कुरंड प्रवेह मूत्र कृछ्र मूत्र रोधन ऽ प्रमरी कुंड पामा
विर्चे र्चि का सूतनारु छीप शस्त्र घाव प्रतीकार नाम पंचम समुद्देश:
॥ ५ ॥ अ॰ बाय प्रतीकार ॥ पद्धरी छंद ॥ असगंध सोंठ तीन
सम जान ॥ सम तुल्य लो खांड़ आन ह औषधि घृत लीजिये
मिलाय ॥ सो सीत व्याधि छिन मांहिं जाय ॥ अथ चूरन ॥
भेग संभाल् भांगरा मुंडी ताहि मिलाय । चोक छिड़ीग जवाइन
आनि सोंठ कलौंजी पीपल मूल । अकर करो मेलो सम तूल ॥
दूने गुड़ सों गोली करो ॥ टंक १ परमान ता धरो ॥ प्रात उठ के गो
ली खाय ॥ बाय ८४ ना रहाय ॥ १५ ॥ अथ त्रिपुर भैरव र-
स ॥ चौ॰ ॥ टंक ४ सोंठ कोलय ॥ मिरच टंक चार पुनि दे-
य ॥ तीन सुहागा बिस दूधपरा आक रस सोय नी धरी ॥ १६ ॥
गुंजा सम गोली परवीन । सीत हरै निश्चै ता जीन ॥ बायु रो-
ग छिन मांहि पलाय । कृष्ण सुमिर पातक मिट जाय ॥ १७ ॥

अ॰ बाउ पाड़ा को क्काथ ॥ दो॰ ॥ सोंठ ररंड रासना देवदारु गि-
लोय ॥ काढ़ा पाजे प्रात उठि पीड़ा बात न होय ॥१९॥ अ॰ बि-
ष गर्भतेल । मीठा तेल सेर इक आन । बुलप धतूरे का रसजा-
न ॥ गुंजा बिष धतूरे बीज । टंक पांच पांच सो लीज ॥ बिधि
जु तेल का कहिये आन । लघु बिष गभ तल सो जान । मर्दन
देही कीजे जाय । बाय चौरासी तन न रहाय ॥२०॥ आवल
सम हि कूट खीर करी गो दुग्ध सों । खात सीत इड़ फूट ना-
से अंग की ॥ अ॰ त्रयोदश गुग्गुल। माल कांगनी रासना अस-
गंध सोंठ गिलोय । तिवीत खंड़ी सों कहें सिता सिताबर सो
य ॥ अजवायन सम पीस के सब सम गुग्गल पाय ॥२२॥ अ-
र्ध भाग गो घीव सों गोली करो मिलाय । तप्त उदक गो दुग्ध
सों टंक दोय सो खाय ॥ २३॥ कटि प्रहरी गरा जोनि दुख क-
हूं हुं बाय नाड़ी जंघा घाव के बायु पुष्ठ हड सोय । मज्जा संध
सुषन सुनि एते बायु न होय ॥ अ॰ पि॰ प्र॰ ॥ इलायची कपूर उ-
सीर ठान । आंवले अरु चंदन तुल्य आन । ए पीस जु पीजे
जल मिलाय । सो पित दाह छिन में जाय ॥ २५॥ अ॰ लेप ॥ दो॰
बेरी पल्लव आंवले तंदुल छड़ पुनि सोय । जल सों लेपिये
चरण तल दाह बिथा नहिं होय ॥२६॥ अ॰ छर्द का चू॰ ॥ लेइ
बुहरी कवल फल अवर रालाची धार । पीस मदत सो दीजिये छ-
र्द उना कीजाय ॥ अ॰ लेप ॥ कांसी थाली महिं नीर सों सो बरही घृ-
त धोय । लप करे सो चरन युग बायु बिथा नहि होय॥ अ॰ कफ का
प्र॰ केसर सिगंध पीपली भाड़ंगी पुन जान । मर्दो त्राबालग
संग ये सम पीस हु आन । पान हि सों सब दीजिये परमित टंक
तें आन ॥ कफ खांसी अरु स्वांस ज्वर होइ खई जु समान॥३०॥
अ॰ चू॰ ॥ लोंग भाडंगी पीपली सोंठ कटाई पाय । पीस पियो जल
तप्त सों कफ खांसी दुख जाय ॥३१॥ अ॰ गंड माला प्रतीग्र। पीस लि

पीपल औ कचनार फल त्रिफला सम आन। पीस पियो जल तप्त सों नासे कीरा जान ॥ ३२॥ अ॰ लेप ॥ सोंठ भाडंगी पीस कर तंदुल जल संयोग। कंठ लगावहु पीस कर हरै सुजीरा रोग ॥३३॥ अ॰ कचरा जुगल पल दश तुंबु कचनार की त्रिफला षट पल लीजिये। त्रिफला त्रिकुटा धार चूरण पल टंक तोल धर ॥३४॥ कर्ष कर्ष परमान पत्र तज इलायची गुग्गल सब सम आनि गुटि कीजै टंक खयर क्वाथ सों देय ॥ अ॰ पथ्या तप्त जल सुंडी क्वाथ करई। प्रात समै लेजा निके गंड माल पुनि कुष्ट। अपची गोली ग्रंथ पद मेह भगंदर कुष्ट। अविश्वास य सत्य सुनि ॥३७॥ अ॰ मुख रोग प्रतीकार ॥ तवाखीर और इलाइची मोथा रलाय मुख्य मह मेलहु पीस कर वदन पीकन रहाय ॥ ३८ ॥ अ॰ दांत रक्त प्र॰ ॥ रस नासा का महत मिल मधुहूं तें दिन मोय। प्रातजु चाटहु सात दिन दांत रक्त नहिंहोय ॥ ३९ ॥ वासा मोथा क्वाथ सरजुर टो वट पुनि जान लोद मजीठ मिलाय कर पीसहु सम कर आन ॥३९॥ ये औषद दस नेम ले रक्त गमन सो पाइ। पीड़ा कीटक सवहरे निमय बीच सों पलाय ॥ ४०॥ अ॰ औषधी मुख पाक की ॥ त्रिफला दोय गिलोय सत चमेली दल पाय। दारु हलद अरु पाठ सुनि ए लोन समझाय ॥४१॥ मुष पील का औषद सरसों सीधा लोध बच ये औसध सम सोय। जल सों वदन जु लेपिये कील सिंग नसाय ॥ ४२॥ अ॰ मुख दाव की औषध ॥ कालीरा तिल श्याम जीरा सिरसों पीत पुनि यह सों लेप कराय मुख की छाया ना रहै ॥४३॥ अ॰ लेप ॥ सोंठ हलद कुट लोध पुनि ये औषध सम भाय नीबू रस सों लेपिये मुख की छाया जाय ॥ ४५॥ अ॰ नासिका रोग प्रती॰ ॥ दोहा ॥ अ॰ कशुंभ हरीत की दाडिम पुष्प रलाय। सीत नीर सों नास ले रुध गमनथ भाइ ॥ ४६॥ अ॰ मुटिका मिर्चे और वदाम फल परमित तिलदो देइ ॥

नास लेइ नर नीर सों पीन सुरोग हरेइ ॥ अ॰ नेत्र रोग प्रती॰ ॥ रसव-
त लोद हरीत की जल सों ऊपर लेपिये नयन नीर मिट जाय ॥४८॥
अ॰ रगड़ा॰ कर रगड़ा अंजन करो नयन पीर नहिं होय ॥ ४९ ॥ अ॰
थांजन नेत्र का ॥ कतक फल और जस्त संग मरदी रस संयोग
लोचन अंजन कीजिये होइ भला निशि अंध ॥ ५० ॥ सावण वे
रे बालुका तिल एक अंजन देस । निशि अंधा बहु दिवस निवै
नास करेइ ॥ ५१॥ अ॰ पड़ बालका अंजन । मिरचें गेरू लोन गुड़
ये सब औषध आन । जल सों लेपहु पाइये जाय पड़ बाल हि
जान ॥ अथांजन सबल बाय का ॥ पारा जस्त रांग मिसरी मो-
ती मूंगा जान ॥ छुद छाछ टांक ते लीजिये इनका यही प्रमाण
॥ ५३॥ कंट दांत और वट कासु तासहि इन्हें मिलाय निध २ टंक
मिलाय के कांस थाल गहि घाल ॥ ५४ ॥ छेरी पय सों रगड़िये द-
ग अंजन सु करेय॰ सबल बाय का नास हो दूध भात पथ देय ॥
५५ ॥ रगड़ा नीव जस्त मार के लेहु । लीला थोथा रंचक देहु ॥
फेन समुद फिटकरी आन । सीपी चून सम कर जान ॥ ५६ ॥ जो-
घृत संग कांसी से धरो कर रगड़ा दृग अंजन करो ॥ सबल बाय
बहु दिवस का जाय । कह्यौ पंथ रासा समझाय ॥ अ॰ पोटली ॥ जी
रा कही फिटकरी त्रिफला तासह देहु रसवत हालो हलद संग लो
द अफीम पुनि लेहु ॥ ५८॥ ये औसध सम आनिये करो पोटली
पीस ॥ ५९॥ अथांजन तिमिर धारा बाय का सुरमा ॥ सीत संग
पुनि मैनसिल त्रिफला वेकटु आन । कात फल और मिसरी सम
हस्पेन समान ॥ ६० ॥ अंजन छेरी दुग्ध सों तिमिर रोग न रहा-
य । फोला खोड़ा जाय पुनि नयन पीड़ मिट जाय ॥ ६१॥ अ॰ कच
रन रोग प्रती॰ ॥ आक लसन तिल पात रस कान वेजसो गाय ।
बहरी पीड़ा पीव दुरव एते रोग नसाय ॥ ६२॥

आक पात मह लसन धर नीर दु दोनों सोय । कान माहि-

रस मेलिये पूष दुख नहिं होय ॥ ६३ ॥ देवदारु बच सोंठ पुनि सैंधा सौंफ़ रलाय । अजा मूत्र सों तप्त करे शूल शब्द वहु पूपदुख तब ही नास करेय ॥ ६५ ॥ अ॰ रोग शिर प्रती ॥ लेप ॥ देवदारु कुठ कायफल अरंड तेल सिलाय । कांजी सों जब लेपिये बात शिरा सजजाय ॥ अ॰ कफ सिरावर्त को लेप ॥ अरंड राज नाग्नि कुटा जान। रुड़ बच नवधा पुरा मोथा आन ॥ सो तप्त नीर सों पीसे लाय ॥ छिन महि सुफल सिरवर्ति जाय ॥ ६७ ॥ अ॰ पित शिरवर्तिका ॥ सो॰ ॥ चंदन शिवा उसीर त्रिकुट कबज़ अरु आंवले कमल ब्रजदहो भवेर पित सिरोरुज नास होय ॥ ६८ ॥ अ॰ लेप बीदाय का ॥ कूट मिरच अरु कायफल एरंडी जड़ लेय । तप्त नीर सों पीजिये सो सिरवर्ति हरेय ॥ ६९ ॥ अ॰ लेप आधा सीसी का । कूट पीपल शाखा होली बच मुलहटी जानि । कांजी से ता लेप कर आधा सीसी हानि ॥ ७० ॥ अथ नास घृत सों सौंधा पीस कर नास लेय पर भात । सिद्ध योग नयना कह्यौ आधा सीसी जात ॥ ७१ ॥ अथ यंत्र यंत्र छत्तीसा लिख कर नील तागे । बांधिये मस्तक में आधा सीसी जाय ॥ ७२ ॥ अजे पाल बिष आन नीला थोथा निरख सीलेइये । हिर बीजा शा घिसिये बात सो लेपिये ॥ पाछ तैलाय के पीड़ा नासे संग की । अ॰ केशवघने की औष॰ ॥ फूल तिलह का गोखरु घृत मधु मांह सिलाय । केस लेप सों कीजिये बाल वैद्य अधिकाय ॥ ७४ ॥ अ॰ सिर की करका औष॰ ॥ प्रातक कोड़े काढ़ कर अरु समय दधिवास पाय सीस मंजन करो होय सुकर की नास ॥ ७६ ॥ अ॰ युसिया बालक की औषध ॥ आन ककोड़े काढ़ करि अरु समीप दधि तास । पाय सीस मंजन करो होय बाल का नास ॥ हस्ति दंत की आनिये घीस हु रसवत सोय । छेरी पय सों लेपिये गये केश पुनि होय ॥ ७७ ॥ अ॰ कल्प । लोह चून और भांगरा नील पत्र पल भिन्न अजा मूत सों लेप कर कल्प रहे वहु दिन्न ॥ ७८ ॥

इति श्री केशव दास पुत्र नैनसुख विर्चिते बैद्य मनोत्सवे वात पद गुल्म मुख नासिका नेत्र करन सिरो रोग गतीकार करनो नाम षष्टःम्समुद्देश्यः ॥ ६ ॥ अ. स्त्री रोग प्रती ॥ तवाखीर गज केसर लेय । नेत्र वाला चंदन समदेय तंदुल जल सें देय पिलाय । पय रोग नारी का जाय ॥ ८० ॥ गज केसर तंदुल मिता दीजे नीर मिलाय । प्रदर रोग सो नास होय मसूर भात जब खाय ॥ ८१ ॥ अ. पुष्प की औषध ॥ ब्रह्म डंडी त्रिकुटा सम लेय । तिल काढ़ा सें चूरन देय । गया पुष्प होजाय है नार । औषध लेय होय ततकार ॥ ॥ ८२ ॥ पुष्प वर्तिक बीज धतूरा । वचरी मैनफल पीपल तासहि चूरा । पीसहु सैंहुड दूध सें होय पुष्पता नारि ॥ ८३ ॥ बाती कर भग महि धरहि कह सु पर उपकार । सिद्ध योग यह जान तू नारी ने सुख कार ॥ ८४ ॥ अ. जोनि शुद्ध की औषधि । सिरस कोंपल जायफल सासरफेन मिलाय । बायबिडंग इलाइची गज केसर सम भाय ॥ ८५ ॥ जल सें गोली कीजिये टंक एक परमान । भग में राखे यत्न सें यह औषध है सुजान ॥ ८६ ॥ बंध्या गर्भता होय सुख जोनि दुख सब जाय । साली मूंग गो घी घृत सें पुनि पुष्प कराय ॥ ८७ ॥ अ. गर्भ होने की औषधि ॥ मिरचें सोंठ पीपलें लेउ । गज केसर सों कटाई देउ ॥ गो घृत सें पीवे नार । ताको होय गर्भ तत्कार ॥ ८८ ॥ गजकेसर असगंध सिला गोरोचन गालपुनि । पय सें पीवो बाड़ होय गर्भ तत्काल सुनि ॥ धेनु दुग्ध सें लक्ष्मणा करे पान जो नार । मास लेइ बरतु बसें होय गर्भ तत्कार ॥ ९० ॥ अ. कष्ट स्त्री का उपाय ॥ आठ अवंगा पीस करे करे लेप भग मांहि । होय प्रसूत तत्काल ही उदर पीड़ जाहिं ॥ ९१ ॥ पय सें हड़ का आनि लेप करो नख नाभि पर । करे कष्ट की हानि छिन महिं होय प्रसत सें ॥ ९२ ॥ जद मूली की लेइ कटि बांधे कष्टी बधू । तब ही पीर हरेइ होय प्रसूत त-

त्कालतसू ॥ ९३॥ अ॰ गर्भ होने का प्रतीकार ॥ धायल जालू क मल फल मुलहटी ता पाय । तंदुल जल सों दीजिये तासु गर्भ रहि जाय ॥ ९४॥ अ॰ संकोचन भग प्रतीकार ॥ पीस कला फिट-करी माई लोद कपूर । बेर डांड कनेर छाल माजूफल महिचूर ९५ मध्य गेह बिच पाय के करे पुरुष से भोग। सेज अधिक संको-च हो रहे न कोई रोग ॥ ९६॥ माई धावे पड़ कडी माजू लोद जु सो-दू । बेर की जड़ सों पाये सौकन भावे टौइ ।९७॥ त्रिफला लोद हरीत की जामन जड़ पुन होय । भग में लेपहु सहत सों वृद्ध कु-वारि होय ॥ ९८॥ मठा गौ का आनि । दिन रात धोवे जोन तिय हो-य। संकोचन जोन सिद्ध योग नयना कह्यौ ॥ ९९॥ गोली कस्तूरी और कपूर सम गोली मधु कर पाय । योन बीच सो राखिये बा-री सौकन जाय ॥ १००॥ अ॰ जोन दुर्गंध हरन। नीम पात का क्वा-थ कर धोवे यासों तोय । अति दुर्गंधता नारहे आनंदित होय पीय ॥ १॥ अ॰ कुच कठिन ॥ असगंध महुवा गज कणा बच कन पर कूटे सोय। प्रगट योग नयना कह्यौ सर्ब सरोग हरेय। २॥ अ॰ थनेली की औषधि ॥ हलद कुआ आ तप्त करि कुच ऊपर ते धरेइ । थनेले का नाम मिटे सिद्ध योग जानेइ ॥ ३॥ अ॰ बाल की औ-षधि ॥ काकड़ा शृंगी कणा अतीस बालक चाटे मधु सों पीस ॥ ताप कांस और छर्दि मिटाइ । अथवा सहत अतीस जो खाय ॥ ४ ॥ अथ अतीसार की औषधि ॥ बाला लोद मि-लाय बले धातु की गज कणा मधु सों क्वाथ कराय । अतीसार का नास होय ॥ ५॥ अ॰ गुदा पाक की औ॰ ॥ रसवती लावहु गु-दा पर और याको को देय बाकी हरन भली होइ सिद्ध योग जानेय ॥ ६॥ अ॰ पुरुष चिकित्सा ॥ बिजया अर्क कनेर जड़ रस धतूरा पाय । गोली कीजे पीस के लीजे छांह सुकाय ॥ ७॥ पुरुष मूत्र सों पीसिये करहु लेप इंद्रीय । दीर्घ कठिन और स्थूल

हो देखत भागे तोय ॥ ८ ॥ बचा कूट गज पीपली असगंधा वले सुदे-
य । महिषी घृत सों लेपिये लिंग दीर्घ बहु होय ॥ ९ ॥ अ० लेप ॥
अस गंध पारद गजकणा रजनी सिता मिलाय । लेपन कीजे लिं-
ग पर वृद्ध स्थूल कराय ॥ १० ॥ अ० थंभन ॥ अजा सेहुड़ का दुग्ध
पुनि लज्जालू जड़ पाय । कर पद नाभि सों लेपिये थंभन होय
अधिकाय ॥ ११ ॥ अ० मदन प्रकाश चूरण ॥ ताल मखाना मू-
सली सोंठ भाड़ंगी पाय । असगंध कौंच बीज पुनि सेंवल फल
सु मिलाय ॥ अ० औषध मातल पद्मा की ॥ मोठा भीम हु जायफल
बीज धतूरा सोय । घृत सों इंद्री लेपिये सीत लिंग दृढ होय ॥ अ-
हीफीम हु आनि केकर हु बातिका योग । लिंग छिद्र नहिं राखि-
ये बहुत करे नर भोग ॥ २३ ॥ बली सितावर मोच रस लेहु ल-
ता सो जान । खांड़ दुग्ध सों जो पिये बहुता रमें सुजान ॥ २५ ॥
अ० गुटिका ॥ कुंकुम सिंगरफ जायफल ताल मखाना पाय ॥
कौंच बीज तज मस्तगी अकरकरा जु मिलाय ॥ २६ ॥ निंबुर
लौंग तमाल पत्र अजवान । खुरासानी तीन भाग ये लीजिये
भाग परवान ॥ २७ ॥ रस विजया गुटिका करो परमित टंक
ता एक । सयन समय भक्षन करे स्त्री रमे अनेक ॥ २८ ॥
अ० दुर्गंधता हरन ॥ चंदन रजनी मोथ कपूर । लोद अगर मद
मास कचूर ॥ बड़ महुवा गज केसर पाय । गांडर जड़ आं-
वले मिलाय ॥ देही मर्दन कीजे आस । होय दुर्गंधता छिन
में नास ॥ पित्त दोष सब नासे जान । कवर ग्रंथ कह्यो बखा-
न ॥ २० ॥ अ० बगल गंध का उपाय ॥ मोथा बील हरीत की बा-
ज आंवला पाय । लेप करे नर नीर सों बगल गंध सु मिटा-
य ॥ २१ ॥ अथ सिर दुर्गंध का चंदन ॥ मोथा लेय करि ला-
लौ समु कपूर । जल सों लेपहु सीस में होय दुर्गंधता दूर ॥
॥ २२ ॥ परिमित ग्रंथ समुद्र सम मम मति खेवत पार ॥

ओषद रतन जते गहे किया प्रगट संसार ॥२३॥ वैद्य मनोत्स
व ग्रंथ में कहेउ ससिल निज ज्ञान । दुखद दलन सब सु
ख करन आनंद परम निधान । २४॥ केशव रक्ष सुत नैन
सुख कह्यौ सुखकंद । शुभ नगरी श्रीनंद महि अकबरशा
ह नरेंद्र ॥ २५॥ अंक बेद रस भेद नौ शुक्ल पक्ष शुभ रास। ति
थि द्वितीया भृगु वार पुनि पुष्यचंद्र सु प्रकास ॥२६ मात्रा
अक्षर छंद कहि कहि जु अल्प मति सोय । गुन जन सबै सं
म्हारियें हीन जहां कछु होय ॥ ४२७॥

इति श्री वैद्य मनोत्सवे केशव दास पुत्र नैनसुख विर्चिते
पुष्प का जोन शुद्ध गर्भ होना संकोचन कुच कठिन थनेला
बालक उपाय अतीसार काथ गुदाशंक पुरुष चिकित्सा लेप
न थंभन सीतला पस्वामदन प्रकाश गुटिका दुर्गंध बगल ग-
ध प्रतीकार नाम सप्तमः समुद्देशः ॥७॥ समाप्तम् शुभम् ॥